यॉंत्रिक कारखाना
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
(कल, आज और कल)

बाबा गोरखनाथ की पवित्र तपोभूमि पर पूर्वोत्तर रेलवे के मुख्यालय में स्थित यॉंत्रिक कारखाना, पूर्वोत्तर रेलवे के संचालन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह कारखाना कुल 29.8 हेक्टेअर भूमि में फैला हुआ है इसमें से 12.6 हेक्टेअर क्षेत्रफल में विभिन्न शाप तथा कार्यालय स्थित है। इस कारखाने की औपचारिक स्थापना वर्ष 1903 में हुई थी।

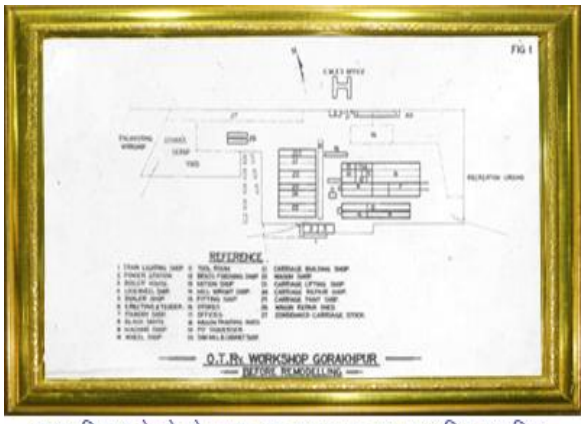

अवध तिरहुत रेलवे के समय का कारखाना का प्रस्तावित मानचित्र

इतिहास के पन्नों को उलटने पर पता चलता है कि उस समय इस क्षेत्र में रेल का एक मात्र कारखाना समस्तीपुर में स्थित था, जो बंगाल एण्ड नार्थ वेस्टर्न रेलवे का हिस्सा था जिसमें ब्रिटिश फौज के प्रयोग के लिए मीटर गेज के विभिन्न प्रकार के वैगन बनाने का कार्य किया जाता था।

यॉंत्रिक कारखाना निर्माण

यह कारखाना इससे पहले सोनपुर में था जहॉं प्रति वर्ष बाढ से कई महीने तक कारखाने का काम बन्द हो जाया करता था। इस कारण 1898 में एक सर्वे टीम सोनपुर से पैदल, नाव तथा घोडों आदि की मदद से 7–8 दिन में गोरखपुर पहुॅंची। उस सर्वे टीम को यदुनन्दन मिस्त्री व रघुनन्दन मिस्त्री नाम के दो ठेकेदार उचित स्थान की खोज करते हुए गोरखपुर लेकर आये थे। यह दोंनों लोग सोनपुर कारखाने में बतौर ठेकेदार काम करते थे। उस समय कोच रिपेयर का काम ठेके पर होता था। वर्ष 1898 के सर्वे के बाद सोनपुर से कारखाने को गोरखपुर स्थानान्तरित करने का कार्य प्रारम्भ हुआ, जो लगभग 5 वर्षों के उपरान्त वर्ष 1903 में पूरा हुआ।

20वीं शदी के प्रारम्भ में भारत में राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। उत्तर भारत विशेषकर बंगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश इस परिवर्तन के केन्द्र बिन्दु थे। इसी समय आसाम–दिल्ली रुट पर स्थित गोरखपुर, यातायात के महत्वपूर्ण केन्द्र के रुप में पहचान बना रहा था। गोरखपुर में लोको और कैरेज के पुर्नकल्पन की आवश्यकता को पहचानते हुए तत्कालीन रेलवे प्रशासन ने यहां एक वर्कशाप की स्थापना करने का निश्चय किया, जिसके फलस्वरूप सन् 1903 में गोरखपुर का वर्तमान कारखाना स्थापित हुआ जिसे बंगाल एवं आसाम नार्थ वेस्ट रेलवे लोकोमोटिव एवं कैरेज कारखाना का नाम दिया गया तथा इसके सर्वोच्च अधिकारी के रुप में श्री ए.इ. रायल्स सुपरिन्टेन्डेन्ट के पद पर पदस्थापित हुये।

स्टीम लोको पुनर्कल्पन शाप (1903–1994)

उल्लेखनीय है कि 20वीं शदी के प्रारम्भ में गोरखपुर औद्योगिक और सामाजिक दृष्टिकोण से बहुत पिछड़ा हुआ था। पूर्वान्चल के लिए गोरखपुर कारखाने की स्थापना एक आधारशिला साबित हुई जिस पर भविष्य में गोरखपुर के औद्योगिक विकास की इमारत खड़ी होनी थी। उस समय इस क्षेत्र में कुशल कारीगरों की अनुपलब्धता के कारण कारखाने में अधिकाश कर्मचारी समस्तीपुर और उसके आस–पास के क्षेत्रों से काम करने के लिए लाये गये। ये कर्मचारी धीरे–धीरे गोरखपुर के औद्योगिक परिदृश्य को बदल रहे थे। उनकी योग्यताओं का सम्मान करते हुए रेल प्रशासन ने उनको समस्तीपुर, सोनपुर आदि जगहों से गोरखपुर आने जाने के लिए एक साप्ताहिक वर्कमेन ट्रेन चलाई जिसके लिए कर्मचारियों को '**चार–आना**' का टिकट दिया गया। **'चार–आना'** टिकट की परम्परा लगभग 1983 तक चलती रही इस सुविधा का लाभ उठाने वाले अंतिम कर्मचारी श्री भरत लाल श्रीवास्तव निरीक्षण शाप से रिटायर हुए।

गोरखपुर का बदलता औद्योगिक परिदृश्य

लगभग 40 वर्षों अर्थात् वर्ष 1947 तक इस कारखाने की धीमी गति से निरन्तर प्रगति होती रही। टेक्नालोजी के बदलाव के साथ–साथ कारखाने का स्वरुप भी बदलता गया और यहां पर मीटर गेज यानों तथा भाप इंजनों के सावधिक पुनर्कल्पन का कार्य भी प्रारम्भ किया गया।

स्टीम लोको की मरम्मत करता कारीगर

आजादी के बाद भारतीय रेलों का पुनर्गठन हुआ और बदले परिदृश्य में सवारी व माल डिब्बा तथा स्टीम लोको के मरम्मत तथा उत्पादन इकाई के रुप में गोरखपुर कारखाने का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण हो गया। तत्कालीन रेलवे प्रशासन द्वारा कारखाने के स्वर्णिम भविष्य और आवश्यकता का पूर्वानुमान लगाते हुए सन् 1952 में इसके आधुनिकीकरण तथा विकास का एक प्रारुप तैयार किया गया। गोरखपुर कारखाने का यह प्रारुप रेलवे की 50 वर्षो की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए बनाया गया था। इस योजना के अर्न्तगत कई नये शापों तथा उत्पादन ईकाइयों का निर्माण हुआ। सन् 1958 में निर्माण कार्य पूरा होने पर कारखाने का स्वरुप काफी बदल चुका था। फर्निशिंग शाप, आरा कल शाप, वैगन लिपिटंग शाप, पेन्ट शाप आदि कई नये शाप अस्तित्व में आये। इसके बाद गोरखपुर कारखाने में एमजी के भाप इंजन एवं सवारी व मालवाहक यानों के सावधिक पुनर्कल्पन के कार्य सुचारुरुप से प्रारम्भ हुआ। यॉत्रिक कारखाना के उत्पादन में निरन्तर उत्थान में वर्ष 1961 के बाद से चितरंजन कारखाना पैटर्न पर इन्सेन्टिव स्कीम का लागू होना था। इन्सेन्टिव स्कीम के लागू होने के बाद यह कारखाना उत्पादकता की नई–नई ऊॅचाईयों को छूता रहा।

आरा कल शाप का निर्माण कार्य

भारतीय रेल की तकनीकी प्रगति के साथ–साथ यांत्रिक कारखाने का स्वरुप भी बदलता रहा। इसी क्रम में यहां प्रयोग की जाने वाली तकनीकी को लगातार अपग्रेड किया जा रहा था। विभिन्न महत्वपूर्ण परिवर्तनों के साथ–साथ यांत्रिक कारखाना, गोरखपुर की विकास यात्रा निर्वाध गति से चलती रही। वास्तव में यांत्रिक कारखाना ने तकनीकी प्रगति को आत्मसात करने की तैयारी बहुत पहले से प्रारम्भ कर दी थी। इसी क्रम में स्टील बाडी के यानों का सावधिक पुनर्कल्पन यांत्रिक कारखाना में 1962 से ही प्रारम्भ कर दिया गया था। ये कोच वनज में हल्के तथा लकड़ी के कोचों से अधिक मजबूत होते थे।

कारखाना मुख्य द्वार का निर्माण

इस कारखाना में बीजी यानों का सावधिक पुनर्कल्पन 1984 में प्रारम्भ कर दिया गया था। रेल विकास यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव यूनीगेज पालिसी का लागू होना था जिसके तहत मीटर गेज तथा नैरो गेज की लाइनों का आमान परिवर्तन बड़ी लाइन में बड़े पैमाने पर शुरु हुआ। बदले हुए परिवेश तथा आवश्यकताओं को देखते हुए गोरखपुर यांत्रिक कारखाना में मीटर गेज वैगन का सावधिक पुनर्कल्पन फरवरी, 1984 में बन्द कर दिया गया तथा ब्राड गेज यानों का सावधिक पुनर्कल्पन का कार्य प्रारम्भ किया गया। भारतीय रेलों के विकास का एक महत्वपूर्ण पड़ाव ट्रैक्सन पालिसी में परिवर्तन था, जिसके फलस्वरुप स्टीम इंजन की जगह डीजल/इलेक्ट्रिक इंजन प्रयोग में आये। यांत्रिक कारखाना में इसी के साथ स्टीम लोको का सावधिक पुनर्कल्पन 1994 में बन्द कर दिया गया।

कारखाना से निकला अंतिम स्टीम लोको

20वीं सदी के दौरान कारखाने ने अपनी विकास यात्रा में अनेक महत्वपूर्ण मंजिलों को सफलता पूर्वक पार किया और इस दौरान अपने उत्पादों को लगातार समयानुकूल परिवर्तित कर परिचालन को महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया। 20वीं शताब्दी के अन्त तक कारखाने को 21 वीं शताब्दी की आवश्यकताओं के अनुरुप ढालने के लिए बड़े पैमाने पर परिवर्तनों की आवश्यकता प्रतीत होने लगी थी। अतीत के 97 वर्ष के गौरवपूर्ण स्वर्णिम इतिहास की पृष्ठभूमि के साथ यह कारखाना 21 वीं शताब्दी में एक महत्वपूर्ण कोच रिपेयर शाप के रुप में नया इतिहास लिखने को तैयार था।

कारखाना का विस्तार

कारखाने के भविष्य को ध्यान में रखते हुए 1998–99 में लगभग 20 करोड़ का वर्क्स प्रोग्राम, कारखाना के विस्तार हेतु रेलवे बोर्ड भेजा गया। इसके तहत कारखाने की सावधिक पुनर्कलपन की क्षमता 75 कोच प्रतिमाह से 125 कोच प्रतिमाह तक बढ़ाये जाने हेतु प्रस्ताव भेजा गया। रेलवे बोर्ड ने इस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकृति प्रदान कर दी। धीरे–धीरे इस योजना के अर्न्तगत स्वीकृत धनराशि से नये निर्माण कार्य हुए। इसी क्रम में वर्ष 2001 में मीटर गेज यान का सावधिक पुनर्कल्पन जनवरी में बन्द किया गया और इसके साथ यॉत्रिक कारखाना, गोरखपुर बड़ी लाईन यानों के सावधिक पुनर्कल्पन का कारखाना बन गया।

वर्तमान स्वरुप में यॉत्रिक कारखाना

पूर्वोत्तर रेलवे के भविष्य की आवश्यकताओं को देखते हुए कारखाने को अभी भी कई मंजिल तय करना शेष था। 21वीं शताब्दी, यॉत्रिक कारखाना के लिए एक और स्वर्णिम अवसर लेकर आयी। वर्ष 2000–2001 में रेलवे बोर्ड से 20 करोड़ की लागत से एक और नये निवेश की स्वीकृति प्राप्त हुई। इस निवेश के तहत कारखाने की सावधिक पुनर्कल्पन की क्षमता 125 से बढाकर 175 कोच किया गया। इन दोनों निवेशो के पूर्ण होने पर यॉत्रिक कारखाना गोरखपुर, भारतीय रेल में पॉचवे स्थान से बढ़कर चौथे स्थान पर आ गया है। यह गर्व की बात है कि 1970 मे गोरखपुर कारखाने को सबसे पहले नेशनल सेफ्टी (एक्सिडेन्ट फ्री) अवार्ड मिला। उसके बाद वर्ष 1973, 1977 तथा 1979 मे भी यह अवार्ड गोरखपुर कारखाने को मिला, जो कारखाना कर्मचारियों की कार्यकुशलता और सजगता का प्रतीक है।

वर्ष 2003 में यॉत्रिक कारखाना गोरखपुर ने अपना शताब्दी वर्ष पूर्ण किया। वर्तमान में यह कारखाना लगातार अपनी क्षमताओं में वृद्धि करता हुआ, नई–नई मशीनों और संयंत्रों के प्रयोग द्वारा उत्कृष्ट कार्य करता हुआ नई ऊॅचाईयों की ओर कदम बढ़ा रहा है। वर्तमान में रेलवे बोर्ड के दिशा निर्देशों के अनुरूप यॉत्रिक कारखाना गोरखपुर 174 कोच प्रतिमाह का सावधिक पुनर्कल्पन का कार्य कर रहा है। इसके साथ ही 132 कोच प्रतिमाह के लिए बोगी का आई ओ एच कर रहा है।

शताब्दी समारोह–2003

मुख्य प्रशासनिक भवन–1907

यह कारखाना लगातार यात्रियों की संरक्षा, सुरक्षा एवं सुविधाओं के प्रति सजग रहा है, जिसके लिए अनेक परिवर्तन तथा आधुनिकीकरण किया जाते रहे है। यह कारखाना पूर्वोत्तर रेलवे एवं अन्य निकटतम मंडलों के लिए डीजल लोको चक्के, कैरेज चक्के, डिस्ट्रिब्यूशन वाल्व, शाक एब्जार्बर, स्टेशन कैश सेफ, एयर ब्रेक के विभिन्न अवयव, बायो टायलेट आदि के मरम्मत का कार्य भी कर रहा है।

अपने स्थापना के 112 वर्ष बाद भी पूर्वोत्तर रेलवे की आवश्यकताओं के अनुरुप यॉत्रिक कारखाना, गोरखपुर ने भविष्य की योजनाओं पर भी अपना ध्यान केन्द्रित रखा है और अब यह कारखाना एल एच बी कोच के सावधिक पुर्नकल्पन के लिए भी तैयार है।